UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 10, अंक : 1, जून 2022

इंटरनेट से संगीत शिक्षणः समस्याएँ एवं समाधान

दीपिका पुरोहित

शोधार्थी, डिपार्टमेंट ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स, वनस्थलि विद्यापीठ, राजस्थान

Paper received on : March 26, April 18, Accepted on May 15, 2022

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्तमान समय में इंटरनेट से संगीत शिक्षण एवं अन्य कार्यक्रमों के दौरान आने वाली समस्याओं के बारे में बताते हुए उनके निजात के उपायों को खोजने का प्रयास किया जा रहा है। चूँकि वर्तमान समय में इंटरनेट से संगीत शिक्षण के आयोजन अधिक हो रहे हैं। कोविड-19 वैश्विक महामारी के काल में इंटरनेट ही एकमात्र माध्यम रहा, जिससे प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में संगीत कला से जुड़ा रहा। इसके पूर्व भी इंटरनेट के माध्यम से संगीत शिक्षण एवं कार्यक्रम होते थे परंतु, वर्ष 2019 से इसका अधिक विस्तार हुआ है, जिसमें शोधार्थी ने अनेक समस्याओं का सामना किया है। प्रस्तुत पत्र में शोधार्थी द्वारा इंटरनेट के विभिन्न माध्यमों से संगीत शिक्षण एवं अन्य कार्यक्रमों के दौरान आने वाली समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है। शोध का मुख्य आधार शोधार्थी का अनुभव एवं विचार हैं इसके साथ ही प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत साक्षात्कार प्रविधि एवं तुलनात्मक अध्ययन द्वारा समस्याओं के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द—ऑनलाइन, शिक्षण, तकनीक, इंटरनेट, विद्यार्थी, शिक्षक

शोध-पत्र

आज का युग तकनीकी युग है। इंटरनेट ने मानव जीवन को अत्यंत सरल एवं सुगम बना दिया है। वर्तमान में विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में इंटरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज इंटरनेट के माध्यम से विश्व में किसी भी विषय, क्षेत्र एवं व्यक्ति की आसानी से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इन समस्त विषयों में हमारा भारतीय संगीत भी अछूता नहीं रहा है। आज मानव ने इंटरनेट एवं तकनीकी माध्यम से संगीत क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं, साथ ही वर्तमान में संगीत के विद्यार्थियों को भविष्य निर्माण हेतु अनेक विकल्पों की भी प्राप्ति हुई है। वैदिक पौराणिक काल से संगीत शिक्षा की परंपरा चली आ रही है। समय के साथ-साथ अनेक परिवर्तन एवं नवीनीकरण हुए। जिसमें गुरु-शिष्य परम्परा के अंतर्गत संगीत सीखने एवं सिखाने के नियम, गुण-दोषों में अनेक परिवर्तन हुए। जिन परिवर्तनों में आज इंटरनेट से संपूर्ण जगत परिचित है। ऑनलाइन संगीत शिक्षा का प्रचलन पहले भी था, परंतु कोविड-19 वैश्विक महामारी में ऑनलाइन संगीत शिक्षा, कार्यक्रमों, वेबीनार, कार्यशाला, संवाद आदि का प्रचलन एवं प्रावधान अधिक देखने एवं सुनने को प्राप्त हुआ। जो कोरोना काल में संगीत के विद्वानों एवं गुरु-शिष्यों को वरदान साबित हुआ। जिन्होंने कभी ऑनलाइन पढ़ा नहीं या पढ़ाया नहीं उन गुरुओं ने भी संगीत सिखाया और विद्यार्थियों ने सीखा। इस दौरान अनेक ऑनलाइन कार्यशालाएँ, वेबीनार, संगीत के कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक आयोजन किए गए, परंतु संगीत कक्षाओं एवं कार्यशाला के दौरान शोधार्थी द्वारा अनेक समस्याओं का सामना किया गया। इस शोध पत्र के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण कारण ज्ञात हुए, जिन पर विचार कर इन समस्याओं का समाधान कर इन्हें समाप्त किया जा सकता है। ज्ञात कारण निम्नलिखित हैं—

1. ऑनलाइन संगीत शिक्षण से होने वाले लाभ एवं हानि को स्पष्ट करना।
2. संगीत जगत के अल्प ज्ञानियों एवं नौसीखियों के वीडियो एवं पोस्टों की संख्या बढ़ने से नए विद्यार्थियों को हानि।
3. सोशल मीडिया के संगीत समूहों में अश्लीलता की समस्याएँ।
4. एक ही समय पर संगीत के कई कार्यक्रम एवं कक्षाएँ होने से विद्यार्थियों में असमंजस्ता की स्थिति।
5. तकनीकी समस्याओं के कारण कक्षाओं के दौरान व्यवधान उत्पन्न होना।
6. आर्थिक परिस्थितियों के कारण विद्यार्थी का संगीत ज्ञान से वंचित होना।
7. विद्यालयीन स्तर पर ऑनलाइन संगीत शिक्षण को अधिक महत्व न देना।
8. ऑनलाइन संगीत शिक्षण कार्यक्रम में अनुशासनहीनता के कारणों का उल्लेख करना।

प्रोफेसर संतोष पाठक के अनुसार इस वैश्विक महामारी के संदर्भ में ऑनलाइन संगीत शिक्षण के माध्यम से शिक्षण कार्य सुचारु रुप से 50% क्षमता के साथ पूर्ण किया गया है। ऑनलाइन संगीत शिक्षण में डाटा सम्बंधित समस्याएँ, इंटरनेट कनेक्टिविटी, शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य दूरी जैसी अनेक समस्याओं के कारण 100% तक परिणाम प्राप्त नहीं हुआ है। क्योंकि विद्यार्थी गुरु से उस तरह से नहीं जुड़ पाए जिस तरह आमने-सामने जुड़ जाते हैं। ऑनलाइन संगीत शिक्षण में ओम स्वरलिपि अत्यंत कारगर सिद्ध हुई, जिसमें हम आसानी से स्वरलिपि को लिखकर विद्यार्थियों को भेज सकते हैं। भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के 70 वर्ष के पश्चात् आज हम ओम स्वरलिपि के माध्यम से सरलतापूर्वक स्वरलिपि को पढ़-लिख सकते हैं। जिसका श्रेय गुरु माँ प्रोफेसर रागिनी त्रिवेदी एवं उनके पुत्र टेरेंस तुहिनांशु को जाता है। उनके इस योगदान से महामारी काल में 100% लाभ प्राप्त हुआ। जिसे हमारे विश्वविद्यालय द्वारा भी उपयोग किया जा रहा है, जो विद्यार्थी एवं शिक्षक के लिए रामबाण सिद्ध हुई, परंतु संगीत के प्रायोगिक पक्ष के दृष्टिकोण से ऑनलाइन शिक्षण विद्यार्थियों (विशेषकर नए विद्यार्थियों) के लिए चुनौती का विषय रहा है। क्योंकि भारतीय संगीत सीना-ब-सीना तालीम के साथ सिखाए जाने की परंपरा है, परंतु ऑनलाइन कक्षाओं में 100% सफलता पूर्वक शिक्षण पूर्ण नहीं किया जा सका है क्योंकि शिक्षक के सामने विद्यार्थी सही गाता-बजाता है परंतु कक्षा के पश्चात् उसके गलत रियाज कर लेने के कारण पुनः सुधारकर सिखाने में और अधिक समय लगने के साथ-साथ परेशानी होती है। ऑनलाइन संगीत शिक्षण में स्वर एवं वाद्य को मिलाना शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए बहुत बड़ी समस्या रही है। यदि ऑनलाइन वेबिनार, कार्यशालाओं एवं अन्य कार्यक्रमों के विषय में बात की जाए तो इस महामारी के दौर घर बैठे संगीत से जुड़े व्यक्तियों को संगीत शास्त्र संबंधी बहुत लाभ प्राप्त हुआ है। परंतु दूसरी ओर संगीत के शास्त्र का कम ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों द्वारा विषय की आधी-अधूरी एवं गलत जानकारी देने से संगीत के नए विद्यार्थियों के भविष्य के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। मुख्य विषय से हटकर अन्य विषय की चर्चा करने से ऑनलाइन कार्यक्रमों की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार आज संगीत से जुड़े हर व्यक्तियों को तकनीकी ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।[1]

रामू विश्वकर्मा के अनुसार ऑनलाइन संगीत शिक्षण में सबसे प्रथम समस्या यह है कि 100% विद्यार्थियों में से 20% विद्यार्थियों ही शामिल होते हैं। विद्यार्थियों के आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण उनके पास ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम जैसे मोबाइल, लैपटॉप आदि समस्याएँ हैं। किसी के पास साधन उपलब्ध ही नहीं है तो किसी के घर में एक से अधिक भाई बहनों के बीच एक ही तकनीकी माध्यम होने के कारण कक्षा में उपस्थित न होने जैसी समस्याएँ सामने आई हैं। नेटवर्क सम्बन्धी, डाटा सम्बन्धी समस्याएँ मुख्य रूप से सामने आईं। ऑनलाइन संगीत में मुख्य रूप से प्रायोगिक पक्ष या प्रायोगिक कक्षाएँ आयोजन सदैव नहीं होना चाहिए। यह केवल विषम परिस्थितियों के लिए होना चाहिए। क्योंकि भारतीय संगीत आमने-सामने बैठकर सीखने-सिखाने की कला एवं संस्कार है।[2]

गौरव शुक्ला के अनुसार ऑनलाइन माध्यम का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हम घर बैठे देश-विदेश के किसी भी कलाकार को सुन सकते हैं एवं उनसे संगीत सीख सकते हैं, परंतु यह माध्यम सभी विद्यार्थियों के लिए उपर्युक्त नहीं है। ऑनलाइन माध्यम मात्र विषम परिस्थितियों एवं उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, जिन्हें पहले से संगीत का प्रारंभिक ज्ञान हो अर्थात् उनकी सुर-ताल भाव रूपी आधारशिला मजबूत हो। परंतु नए विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन संगीत शिक्षण के सकारात्मक परिणामों की अपेक्षा करना उपर्युक्त नहीं है। यह उनके भविष्य के लिए घातक सिद्ध है, क्योंकि संगीत में स्वरों को लगाना, उनके उतार-चढ़ाव, भाव, वादन में वाद्य को मिलाना, बजाने का तरीका, नृत्य में मुद्राएँ हाव-भाव आदि को ऑनलाइन माध्यम से विद्यार्थियों को सिखाना संभव नहीं है। ऑनलाइन शिक्षण एवं कार्यक्रमों में नेटवर्क, डाटा संबंधी अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे कार्यक्रमों एवं कक्षाओ में अत्यंत विलंब होता है। ऑनलाइन माध्यम में शिक्षक एवं विद्यार्थी को तकनीकी जानकारी का होना अत्यंत आवश्यक है जिससे समय पर आयोजन संपन्न किए जा सके। ऑनलाइन आयोजनों में औपचारिकताएँ समय को ध्यान में रखते हुए संपन्न की जानी चाहिए।[3]

डॉ. दीपशिखा निगम सूद स्वयं के अनुभव को साझा करते हुए कहती है कि दूरी के कारण ऑनलाइन माध्यम से बड़े-बड़े किसी भी कलाकार, म्यूजिक इंस्टिट्यूट से जुड़ सकते हैं। परन्तु ऑनलाइन माध्यम सभी के लिए उपर्युक्त नहीं है। जिनके पास प्रकर्तिक प्रतिभा नहीं है उन्हें ऑनलाइन शिक्षण आसानी से नहीं दिया जा सकता, और जिनके पास प्राकृतिक प्रतिभा या ईश्वर प्रदत्त संगीत कला नहीं है उन्हें ऑनलाइन शिक्षण नहीं दिया जा सकता। उन्हें आमने-सामने बैठकर शिक्षित करना आवश्यक है। जिससे वह गुरु की प्रत्येक हरकत को हूबहू सीख सके। अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा ऐसे विद्यार्थी को अधिक समय देना अत्यंत आवश्यक है। विद्यालय स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण में विद्यार्थी गंभीरता से संगीत नहीं सीखते हैं अर्थात् विद्यार्थी अनुशासित भी नहीं होते हैं। ऑनलाइन माध्यम में प्रत्येक व्यक्ति को तकनीक संबंधी जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है, जिससे अनेक समस्याओं से बचा जा सकता है। भविष्य में संगीत शिक्षक को तकनीकी संबंधी जानकारी का होना भी अनिवार्य होगा। जिसे समय के साथ उन्नयन अत्यन आवश्यक है।[4]

अवनीश सारथे द्वारा साक्षात्कार में प्राप्त हुई जानकारी के अनुसार कोरोना काल में इंटरनेट के माध्यम से संगीत शिक्षण, शिक्षक एवं विद्यार्थियों को लाभकारी सिद्ध हुआ, परंतु ऑनलाइन शिक्षण में विशेषकर विद्यालयीन स्तर पर कई समस्याएँ सामने आई। जिससे संगीत शिक्षण सुचारू रूप से संपन्न नहीं किया जा सका। विद्यार्थियों का समय पर कक्षा में उपस्थित न होना, सभी विद्यार्थियों का कक्षा

में शामिल न होना, नेटवर्क, डाटा संबंधी समस्या एवं आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के पास ऑनलाइन कक्षा में शामिल न होने के साधन उपलब्ध न होने के कारण, अनुशासनहीनता (ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान विद्यार्थियों का कक्षा में ध्यान ना देना) जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा है। शास्त्रपक्ष हेतु ऑनलाइन संगीत शिक्षण उपर्युक्त है, परन्तु विद्यालयीन स्तर पर प्रायोगिक पक्ष हेतु ऑनलाइन संगीत शिक्षण उपर्युक्त नहीं है।[5]

डॉ. चित्रा शंकर के विचारानुसार भारतीय शास्त्रीय संगीत की 'गुरु शिष्य परंपरा' का विकल्प 'ऑनलाइन शिक्षण 'कदापि नहीं हो सकता। क्या ऑनलाइन शिक्षण विद्यार्थी को राग की तासीर से अवगत करा सकता है या किसी वाद्य को सुर करना सिखा सकता है? नहीं, हम सब इस बात से सौ प्रतिशत सहमत हैं कि कोई तकनीक कितने भी उत्तम होने का दम भरे वह कभी भी किसी राग विशेष के स्वर लगाव तथा ताल के सामंजस्य को वैसा नहीं सिखा सकती जैसा की गुरु के सानिध्य में सीखा जा सकता है। बावजूद इसके वर्तमान में ऑनलाइन शास्त्रीय संगीत शिक्षण जोर पकड़ता जा रहा है और वह भी इसके गिरते हुए स्तर की परवाह किये बिना, जो की दुर्भाग्यपूर्ण है। यदि ऑनलाइन ही एक मात्र विकल्प है तो हमें उन बिन्दुओ पर विचार करना चाहिए जजससे शास्त्रीय संगीत के स्तर को भी हानि न पहुँचे और शिक्षण का भी निर्वहन हो सके। हम उसके प्रायोगिक पक्ष को सर्तकता से एक सीमा तक तथा सद्धांतिक पक्ष को भी उचित सीमा तक शिक्षण का हिस्सा जरूर बना सकते हैं।[6]

डॉ. रामशंकर के विचारानुसार कोरोना वैश्विक महामारी के काल में इन्टरनेट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जो संगीत के विद्यार्थियों के लिए लाभकारी सिद्ध हुई। परन्तु ऑनलाइन संगीत शिक्षण में सबसे बड़ी समस्या यह है कि जब कक्षा में विद्यार्थियों को कोई भी ताल सिखाया जाता है तो ऑनलाइन माध्यम में कई अलग कारणों से ताली कुछ देर बाद विद्यार्थियों के पास पहुँचती है, जिसके कारण सभी विद्यार्थियों को एक साथ ताल सिखाने में असुविधा होती है। अतैव प्रत्येक को अलग-अलग सिखाना होता है, जिसमें एक ही कक्षा में अधिक समय लग जाता है एवं यह करना सदैव संभव नहीं है। यदि गायन के विद्यार्थियों की बात की जाए तो उन्हें स्वर किस तरह लगाया जाता है यह सिखाते समय नेटवर्क तथा अन्य कारणों से स्वर का सही स्वरूप उन तक नहीं पहुँच पाता है। जिसमें विद्यार्थियों एवं शिक्षक दोनों को असुविधा होती है। एवं कई बार विद्यार्थी आधे अधूरे स्वर को पूर्ण मान लेता है। अर्थात् ऑनलाइन शिक्षण, संगीत के 80 प्रतिशत प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी नहीं है। अतः जिन विद्यार्थियों को पूर्व से स्वर-ताल का ज्ञान है उन्हें ऑनलाइन शिक्षण लाभकारी एवं उपयोगी है।[7]

कोविड-19 वैश्विक महामारी सभी की कल्पना के परे है। अर्थात् कहने तात्पर्य यह है कि, किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि, भविष्य में ऐसी परिस्थितियाँ भी निर्मित हो सकती हैं। जिसमें इन्टरनेट मात्र ही एक ऐसा माध्यम होगा जो विषम परिस्थितयों में समस्त संगीत साधकों को निरंतर जोड़ेगा। परंतु शोधार्थी ने स्वयं (शिक्षक एवं विद्यार्थी के रूप में) के अनुभव एवं दृष्टिकोण से प्रारंभ से ही उत्पन्न होने वाली समस्याओं एवं दुष्प्रभावों पर ध्यान केन्द्रित किया। जिन्हें प्रारम्भ में प्रचलित होने से पूर्व ही सुधारा जा सकता है। चूँकि ये समस्याएँ प्रारंभिक अवस्था में है अर्थात् इन्हें शत प्रतिशत सुधारा एवं समाप्त किया जा सकता है।

सर्वप्रथम शोधार्थी द्वारा ऑनलाइन कर्यशालायाओं, वेबिनारों के आयोजनों पर प्रकाश डालते हुए कुछ बिन्दुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। क्योंकि यह भी एक संगीत शिक्षा सीखने एवं संगीत संबंधी जानकारी प्राप्त करने का माध्यम है। इस माध्यम से भी विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं। घर बैठे बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। परंतु शोधार्थी द्वारा ऑनलाइन कार्यक्रमों में उत्पन्न समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए समाधान हेतु प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। जिसमें विद्यार्थियों ने लाभ के साथ कई समस्याओं का सामना भी किया है। जिनके समाधान हेतु उपाय इस प्रकार हैं–

1. संगीत के विद्वानों/विषय विशेषज्ञों द्वारा सारगर्भित, सही एवं संपूर्ण जानकारी प्रदान की जानी चाहिए, अपूर्ण एवं असत्य जानकारी विद्यार्थियों के लिए उचित नहीं है। अतः आयोजकों द्वारा कार्यक्रमों में विद्वानों/विषय विशेषज्ञों को सोच समझकर आमंत्रित करना चाहिए।
2. जिस विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, विद्वानों/विषय विशेषज्ञों/वक्ताओं को उसी विषय से संबंधित चर्चा/वक्तव्य प्रस्तुत करना चाहिए।
3. आयोजकों को समय सीमा को ध्यान में रखते हुए किसी भी कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए। ऐसा न होने पर, उसमें शामिल होने वाले प्रतिभागियों को शारीरिक, मानसिक तनाव, डाटा सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जिससे कार्यक्रम की गुणवत्ता कम होती है।
4. बदलते समय के साथ समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थियों को तकनीकी संबंधी जानकारी का होना अत्यंत आवश्यक है यह भी एक कारण है जिससे ऑनलाइन शिक्षण एवं कार्यक्रमों में समस्या रही है।
5. ऑनलाइन कार्यक्रमों में औपचारिकताओं को कम महत्व देते हुए विषय वस्तु एवं कार्यक्रम की गुणवत्ता को बरकरार रखने पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है।
6. आयोजकों द्वारा ऐसे अज्ञानी व्यक्तियों को आमंत्रित नहीं करना चाहिए जिनके द्वारा अधूरी एवं गलत जानकारी दी जाती हैं क्योंकि एक मंच से उनके द्वारा दी जाने वाली जानकारी को विद्यार्थी सत्य मान लेता है जो कि उसके भविष्य के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। अर्थात् आयोजकों द्वारा विशेषज्ञों का चुनाव करते समय इन बातों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है।

समस्त तथ्यों पर विचार करने के पश्चात् कुछ कारण बार-बार शोधार्थी के सामने आए जिनमें सर्वप्रथम कारण ऑनलाइन संगीत शिक्षण संगीत के नए विद्यार्थियों के लिए उपयोगी नहीं है। क्योंकि संगीत आमने-सामने बैठ कर सीखने एवं सिखाने की कला/विषय है। ऑनलाइन शिक्षण में संगीत के नए विद्यार्थी को उसकी बारीकियों के साथ सिखाना संभव नहीं है। ऑनलाइन शिक्षण विशेषकर संगीत के नए विद्यार्थियों एवं विद्यालयीन स्तर पर उपर्युक्त नहीं है क्योंकि, ऑनलाइन माध्यम में संगीत की बारीकियों जैसे–स्वर मिलाना, वाद्य मिलाना, गले की हरकतें, स्वर लगाने के तरीके, मुद्राएँ, भावाभिव्यक्ति आदि को नहीं सिखाया जा सकता और न ही विद्यार्थी हूबहू उनको सीखने में समर्थ हैं। इसीलिए संगीत के नए विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन माध्यम उपर्युक्त नहीं है। अतः नए विद्यार्थियों एवं विद्यालयीन स्तर पर ऑनलाइन संगीत शिक्षण कारगर सिद्ध नहीं हुआ है। विभिन्न साक्षात्कारों के दौरान एवं स्वयं विद्यालयीन संगीत शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य करने के दौरान सकारात्मक परिणामों की प्राप्ति बहुत ही कम प्राप्त की गई है। जिसमें विद्यालयों में मुख्य विषयों की ऑनलाइन कक्षा के बाद विद्यार्थी का संगीत विषय में रुचि कम लेना या बिल्कुल ही न लेना मुख्य कारण है। डाटा समाप्त हो जाना, अभिभावकों द्वारा भी संगीत विषय को अन्य विषयों की भाँति महत्व न देना जैसे कई कारण सामने आए, जिससे विद्यालयीन स्तर पर ऑनलाइन संगीत शिक्षण सफल नहीं हुआ। जिसका मुख्य कारण संगीत विषय का मुख्य विषयों में शामिल न होना है। संगीत को मात्र मनोरंजन कार्यक्रम वाला विषय ही माना गया है। जिसके कारण बहुत कम विद्यार्थियों की उपस्थिति, कक्षा में गंभीरता से न सीखना, अनुशासनहीनता, समय पर उपस्थित न होना आदि शामिल है। इस समस्या का समाधान संगीत को मुख्य विषय में शामिल करके ही किया जा सकता है। आज इंटरनेट जगत में सोशल मीडिया के माध्यम से बड़े-बड़े संगीतज्ञों, विद्वानों को सहज रूप से सुनना एवं उनसे सीखना आसान हो गया है। संगीत के अल्पज्ञानियों द्वारा यूटूब, फेसबुक पर आधी-अधूरी एवं गलत जानकारी के विडियो डालना संगीत के नए विद्यार्थियों के लिए घातक है। इस समस्या का समाधान संगीत जगत के बड़े-बड़े विद्वान, अधिकारियों, संगीत प्रेमियों, कमेटियों द्वारा किया जा सकता है जिसे समस्त संगीत रसिकों, विद्यार्थियों द्वारा स्वीकार एवं उसका अनुसरण किया जा सकता है। ऑनलाइन संगीत शिक्षण संगीत के उन विद्यार्थियों के उपर्युक्त है जिन्हें पूर्व से स्वर-ताल का ज्ञान है। चूँकि ऑनलाइन संगीत शिक्षण में डाटा, नेटवर्क संबंधी जैसी समस्याएँ बार-बार सामने आती हैं। इसके लिए शिक्षक एवं विद्यार्थियों दोनों को असुविधा होती है। अतः इस समस्या का निवारण समय एवं डाटा को ध्यान में रखते हुए किया जा सकता है। क्योंकि कई बार शिक्षक सिखाने में इतने विलीन हो जाते है कि उन्हें समय का ध्यान नहीं होता अर्थात् यह भूल जाते हैं कि वह ऑनलाइन सिखा रहे हैं(उदाहरणार्थ- अपने अनुभवों को साझा करना, समझाते हुए मुख्य विषय से भटक जाना आदि) और एक निश्चित समय के बाद डाटा खत्म होने की समस्या प्रारंभ हो जाती है। उस दौरान सिखाए जाने वाले संगीत में विद्यार्थियों को असुविधा होती है। जिसमें आवाज का कटना, विडियो रुक जाना, आधी आवाज आना, मीटिंग(ग्रुप) से बाहर हो जाना आदि समस्याएँ आती हैं। अर्थात् शिक्षक एवं विद्यार्थी मुख्य बातों मात्र पर ही ध्यान केन्द्रित करें तो काफी हद तक इस समस्या को समाप्त किया जा सकता है। नेटवर्क संबंधी समस्या के समाधान हेतु शिक्षक एवं विद्यार्थी पूर्व में ही घर, विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय में अलग-अलग स्थानों में नेटवर्क चेक करने के पश्चात् ही कक्षा प्रारंभ करें एवं कक्षा के दौरान इधर-उधर न चलें अर्थात् यथा स्थान रहें। जिससे सीखने एवं सिखाने में नेटवर्क संबंधी समस्या को काफी हद तक समाप्त किया जा सकता है। अंत में शोधार्थी यही स्पष्ट करना चाहती है कि, शास्त्र पक्ष के लिए ऑनलाइन माध्यम कारगर सिद्ध हुआ है और हो सकता है। परंतु प्रायोगिक पक्ष हेतु वह पूर्ण रुप से सौ प्रतिशत सभी के लिए कारगर सिद्ध नहीं हो सकता। जिन्हें पूर्व से स्वर-ताल का ज्ञान है। उन विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन माध्यम उपर्युक्त है। परन्तु ऑनलाइन संगीत शिक्षण विशेषकर संगीत के नए विद्यार्थियों एवं विद्यालयों के लिए उपर्युक्त नहीं है। यदि इसके बाद भी इसे निरंतर जारी किया जायेगा। तो इससे विद्यार्थी की संगीतरूपी खोखली नीव का ही निर्माण होगा। जो विद्यार्थी के भविष्य एवं संगीत जगत दोनों के लिए घातक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साक्षात्कारः संतोष कुमार पाठक, एसो. प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ-राजस्थान, 04 फरवरी 2022 09:36
2. साक्षात्कारः रामू विश्वकर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज विदिशा-मध्य प्रदेश, 04 फरवरी, 2022, 10:16
3. साक्षात्कारः गौरव शुक्ला, असिस्टेंट प्रोफेसर, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर-राजस्थान, 07 फरवरी 2022, 13:37
4. साक्षात्कारः दीपशिखा निगम सूद, एचओडी एण्ड कोर्डिनेटर फॉर दी डिपार्टमेंट ऑफ विजुअल एंड परफोर्मिंग आर्ट्स, साधु वासवानी इंटरनेशनल स्कूल फॉर गर्ल्स, शान्तिनिकेतन-नई दिल्ली, 03 फरवरी 2022, 09:36
5. साक्षात्कारः अवनीश सारथे, संगीत शिक्षक, जवाहर नवोदय विद्यालय, इंदौर-मध्य प्रदेश, 03 फरवरी 2022, 16:11
6. साक्षात्कारः चित्रा शंकर, 21 फरवरी 2022, 15:48
7. साक्षात्कारः राम शंकर, असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 08 मई 2022, 12 :42